SHRI GUJRATI ENGLISH MEDIUM HIGHER SECONDARY SCHOOL, DEVENDRA NAGAR, RAIPUR (C.G.)
SESSION 2020-2021

CLASS : 10 वीं

SUBJECT : हिंदी ('अ' पाठ्यक्रम)

TEACHER'S NAME : डॉ. वीरेन्द्र कुमार साहू

Lesson Plan for the Month : अप्रैल

Week	Chapter/Topic	Learning Out comes	Resources	Activity	Art integration
प्रथम सप्ताह	नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)	स्वयं प्रकाश का जन्म सन् 1947 में इंदौर (मध्यप्रदेश) में हुआ। मकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी करने वाले स्वयं प्रकाश का बचपन और नौकरी का बड़ा हिस्सा राजस्थान में बीता। फिलहाल स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद वे भोपाल में रहते हैं और वसुधा पत्रिका के संपादन से जुड़े हैं। उनके तेरह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुकें हैं जिनमें सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी और संधान उल्लेखनीय हैं। उनके बीच में विनय और ईंधन उपन्यास चर्चित रहे हैं। उन्हें पहल सम्मान, बनमाली पुरस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है। मध्यवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे स्वयं प्रकाश की कहानियों में वर्ग–शोषण के विरुद्ध चेतना है तो हमारे सामाजिक जीवन में जाति, संप्रदाय और लिंग के आधार पर हो रहे भेदभाव के खिलाफ प्रतिकार का स्वर भी है। रोचक किस्सागोई शैली में लिखी गईं उनकी कहानियाँ हिंदी की वाचिक परंपरा को समृद्ध करती हैं। चारों ओर सीमाओं से घिरे भूभाग का नाम ही देश नहीं होता। देश बनता है उसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़–पौधों, वनस्पतियों, पशु–पक्षियों से और इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी समृद्धि के लिए प्रयास करने का नाम देशभक्ति है।	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–2 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 1. कहानीकार स्वयं प्रकाश के किन्हीं दो कहानी संग्रह के नाम बताइए। प्रश्न 2. लेखक स्वयं प्रकाश को किन–किन पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है?	

द्वितीय सप्ताह	नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)	दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे और नेताजी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मों को देखते रहे। कभी गोल चश्मा होता, तो कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, कभी बड़े काचँों वाला गागो चश्मा. .पर काइ–न–काई चश्मा हाता जरूर...उस धलूभरी यात्रा में हालदार साहब को कौतुक और प्रपुफल्लता के कुछ क्षण देने के लिए। नेताजी का चश्मा कहानी कैप्टन चश्मे वाले के माध्यम से देश के करोड़ों नागरिकों के योगदान को रेखांकित करती है जो इस देश के निर्माण में अपने–अपने तरीके से सहयोग करते हैं। कहानी यह कहती है कि बड़े ही नहीं बच्चे भी इसमें शामिल हैं।	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–2 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? प्रश्न 2. ''वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल!'' कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करिए।	
तृतीय सप्ताह	बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)	रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुज़फ़्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में सन् 1899 में हुआ। माता–पिता का निधन बचपन में ही हो जाने के कारण जीवन के आरंभिक वर्ष अभावों–कठिनाइयों और संघर्षों में बीते। दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सन् 1920 में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गए। कई बार जेल भी गए। उनका देहावसान सन् 1968 में हुआ। उन्होंने अनेक दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया, जिनमें 'तरुण भारत', 'किसान मित्र', 'बालक', 'युवक', 'योगी', 'जनता', 'जनवाणी' और 'नयी धारा' उल्लेखनीय हैं। उनकी रचना–यात्रा के महत्त्वपूर्ण पड़ाव है–'पतितों के देश में' (उपन्यास), 'चिता के फ्ल' (कहानी), 'अंबपाली' (नाटक) 'माटी की मूरतें' (रेखाचित्र), 'पैरों में पंख बाँधकर' (यात्रा–वृत्तांत), 'जंजीरें और दीवारें' (संस्मरण) आदि।	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–2 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 1. रामवृक्ष बेनीपुरी किन पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया करते थे ? प्रश्न 2. रामवृक्ष बेनीपुरी की रचना 'पतितों के देश में' गद्य की किस विधा में लिखी गई है?	
चतुर्थ सप्ताह	बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)	बालगोबिन भगत रेखाचित्र के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया है जो मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है। वेशभूषा या बाह्य अनुष्ठानों से कोई संन्यासी नहीं होता, संन्यास का आधार जीवन के मानवीय सरोकार होते	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–2 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्	प्रश्न 1. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिाक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?	

		हैं। बालगोबिन भगत इसी आधार पर लेखक को संन्यासी लगते हैं। यह पाठ सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार करता है। इस रेखाचित्र की एक विशेषता यह है कि बालगोबिन भगत के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सजीव झाँकी देखने को मिलती है।	नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 2. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?	